व्याकरण की शिक्षा के उद्देश्य

- भाषा का शुद्ध रूप पहचानने में छात्रों को सक्षम व समर्थ बनाना ही व्याकरण का उद्देश्य है –पं .लज्जाशंकर झा

- वाक्यों में शब्दों का स्थान ,कार्य एवम् उनके पारस्परिक सम्बन्ध आदि का ज्ञान |

- व्याकरण भाषा शिक्षा का आवश्यक अंग है|यह भाषा रूपी रथ का सारथी है |यह भाषा का स्वरुप बनाता है तथा उस पर नियंत्रण रखता है|यह भाषा का मित्र भी है|यह उसे सच्चे रस्ते पर चलने केलिए प्रेरणाप्रदान करता है |

- नियमों का विधिवत् ज्ञान |

❖चैंपियन के मतानुसार ,"व्याकरण के नियमों का ज्ञान ,छात्रों में मौलिक वाक्य बनाने की योग्यता उत्पन्न करता है|अर्थात छात्रों को शुद्ध रूप से बोलने एवं लिखने की क्षमता पैदा करता है |

❖भाषा के स्वरुप की रक्षा |

❖छात्रों के रचनात्मक वृत्ति में सुधार एवं विकास |

❖छात्रों द्वारा भाषा के गुण और दोष को पहचानना |

❖छात्रों के आलोचनात्मक क्षमता में वृद्धि |

भाषा शिक्षण में व्याकरण शिक्षण का स्थान

- व्याकरण भाषा का सहचर एवं मित्र है |इस की सहायता से भाषा हमेसा सन्मार्ग पर चलती है |
- मौखिक अभिव्यक्ति एवं लेखन में भाषा का शुद्ध प्रयोग व्याकरण के ज्ञान के बिना असंभव है |
- प्रत्येक भाषा का अपना ध्वनि-विचार,शब्द-विचार,तथा अर्थ विचार होता है|इन के बिना भाषा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता है और इन का ज्ञान व्याकरण की सहायता से ही होता है |
- व्याकरण भाषा प्रयोग को व्यवस्थित बनता है|

➢ मात्र –भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषायें सीखने में भी व्याकरण सहायक सिद्ध होता है |

➢भाषा की अशुद्धियां व्याकरण के बिना समझदारी के साथ दूर नहीं किया जा सकता |

➢व्याकरण का ज्ञान अध्यापक में आत्मा-विश्वास उत्पन्न करता है |व्याकरण की सहायता से वह विद्यार्थियों की भाषा सम्बन्धी शंखाओ का निवारण कर सकता है |

➢पं .करुणापति त्रिपाठी ने लिखा है कि " भाषा-शिक्षक का कार्य व्याकरण की शिक्षा के बिना पूर्ण नहीं हो सकता |व्याकरण के माध्यम से ही भाषा रूपी माध्यमिक नौका का सञ्चालन हो सकता है |व्याकरण ज्ञान की अवहेलना से भाषा में उच्छ्रंखलता आ जाती है और वह संस्कति का विनाश कर देती है |भाषा - प्रयोग का उचित रहस्य समजने केलिए व्याकरण ज्ञान अत्यंत अवश्यक है |

व्याकरण की शिक्षण प्रणालियाँ

हिन्दी में व्याकरण शिक्षण की मुख्यतया 6 प्रणालियाँ है-

- सूत्र प्रणाली या निगमन प्रणाली(Deductive method)
- आगमन प्रणाली(Inductive method)
- पाठ्यपुस्तक प्रणाली(Textbook method)
- समवाय प्रणाली(Correlation method)
- भाषा- संसर्ग प्रणाली(Direct Language method)
- खेल विधि(Play way method)

THANK YOU

By Dr. Manoj Kumar

Asst. Prof.

B.B.M.B.Ed.College, Sardaha,Chas,Bokaro

Date:-09-09-2022